?/02/2020

(प्लेटो)

1. काव्य-सत्य :—

प्लेटो दार्शनिक होते हुए भी कवि-हृदय-सम्पन्न था। उसने महान् कवियों के काव्य का अध्ययन किया था। जब हम उसे काव्य और कवि की निन्दा करते हुए पाते हैं, तो किंचित् आश्चर्य और कुछ निराशा भी होती है। पर यदि हम उसके युग की परिस्थितियों, उसकी रुचि, प्रवृति और उसकी जीवन-दृष्टि को ध्यान में रखें तो उसका काव्य के प्रति दृष्टिकोण सहज ही समझ में आ जाता है। वह दार्शनिक था, सत्य का उपासक और तर्क (reason) का हिमायती था।

प्लेटो के अनुसार सत्य वह है जिससे समाज और व्यक्ति के नैतिक और आध्यात्मिक जीवन को बल मिले। इसके विपरीत जो कुछ भी है, उसे वह असत्य मानता है। काव्य को भी वह इसी कसौटी पर परखता है। उसके 'सत्य-सिद्धान्त' को समझने के लिए हमें उसका निम्न उद्धरण ध्यान में रखना होगा :— "जब कभी कई प्राणियों या वस्तुओं की एक सामान्य संज्ञा होती है, तो हम कल्पना कर लेते हैं कि उनका एक सामान्य आदर्श (Idea) या रूप (Form) होगा।

उपर्युक्त कथन से स्पष्ट है कि प्लेटो सामान्य अथवा विश्वजनीन (universal) सत्य को ही सत्य मानता। उसकी दृष्टि में विशिष्ट सत्य विश्वजनीन सत्य की छाया (appearance) मात्र है। उसने पलंग का उदाहरण देकर अपनी बात बताई है और कहा है कि ईश्वर केवल एक पलंग की रचना करता है, वह पलंग आदर्श होता है : शेष जितने पलंग होते हैं, वे सब आदर्श पलंग की नकल मात्र होते हैं। 'सत्य' उसी आदर्श पलंग में निवास करता है, शेष पलंग असत्य है।

जहाँ तक काव्य-सत्य का सम्बन्ध है, प्लेटो ने अपने युग की काव्य-कृतियों से प्रभावित हो, उसके सम्बन्ध में अपना निर्णय दिया। उसने देखा कि जीवन में जो उदात्त और वांछनीय है, काव्य में उसके विपरीत है, अर्थात् काव्य में अनुदात्त और भाव अवांछनीय तत्व अधिक हैं। उदाहरण के लिए, होमर के काव्य में नायक को रोते और छाती पीटते दिखाया गया है। जीवन में हम इसे अच्छा नहीं समझते, हमा

विवेक हमें ऐसा करने से रोकता है, पर काव्य में हम यह सब पढ़ आनन्द पाते हैं। अतः उसने कहा कि काव्य का सत्य वास्तविक सत्य नहीं होता।

प्लेटो को कविता का सत्य इसलिए भी सत्य नहीं लगता, क्योंकि वह कविता को अज्ञान से उत्पन्न मानता है। उसका मत है कि कवि जिस वस्तु का अनुकरण करता है, उसकी प्रकृति से परिचित नहीं होता। जैसे पलंग का चित्र बनाने वाला चित्रकार मूल पलंग की प्रकृति से न तो पूर्ण परिचित ही होता है और न उसका स्वरूप ही सचाई से अंकित कर पाता है। इसी प्रकार त्रासदी-लेखक न तो अपने अनुकार्य की प्रकृति से परिचित होता है और न उसका सच्चा स्वरूप ही अंकित कर पाता है। उसका अनुकरण अज्ञानजन्य होता है और उसका सत्य भ्रामक।

प्लेटो का मत था कि कवि यश और कीर्ति चाहता है। इसके लिए वह पाठकों या श्रोताओं की वासनाओं को उत्तेजित कर लोकप्रिय बनता है। वह आवेगपूर्ण और उन्मादग्रस्त (Passionate and fitful) प्रकृति को चुनकर उसका चित्रण करता है, क्योंकि ऐसी प्रकृति का अनुकरण भी सुगम होता है और ऐसे अनुकरण को पाठक भी पसन्द करते हैं। सारांश यह है कि कवि आत्मा के विवेकपूर्ण अंश को प्रसन्न करने या प्रभावित करने के लिए नहीं लिखता और न ऐसा करना वह काव्य का प्रयोजन ही मानता है। त्रासदी के सम्बन्ध में प्लेटो ने लिखा था, ट्रैजेडी का कवि हमारे विवेक को नष्ट कर हमारी वासनाओं को जाग्रत करता है, उनका पोषण करता है और उन्हें पुष्ट करता है।